

डॉ. रोजर ग्रीन, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट, व्याख्यान 17, द साल्वेशन आर्मी

© 2024 रोजर ग्रीन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह साल्वेशन आर्मी पर सत्र 17 है।

हम व्याख्यान संख्या 8, 19वीं शताब्दी में इंजीलवाद का धर्मशास्त्र में हैं।

तो, जो हुआ है, वह यह है कि, एक अर्थ में, निश्चित रूप से चर्च धर्मशास्त्र और अन्य का भौगोलिक केंद्र अब 19वीं शताब्दी में ऑक्सफोर्ड आंदोलन नामक एक उच्च चर्च आंदोलन के साथ इंग्लैंड में चला गया है। और हम ऑक्सफोर्ड आंदोलन के बारे में बात करने के बीच में हैं। और फिर हम। दूसरे, हम एक और आंदोलन के बारे में बात करने जा रहे हैं, और इसके लिए थोड़ा स्पष्टीकरण चाहिए, इसलिए जब हम इस पर पहुंचेंगे तो मैं इसे समझाऊंगा और हम इसे क्यों कर रहे हैं।

तो, मुझे बस थोड़ा पीछे जाना है। हमने ऑक्सफोर्ड मूवमेंट का परिचय दिया, और फिर हमने ऑक्सफोर्ड मूवमेंट की शुरुआत की, और हमने ऑक्सफोर्ड मूवमेंट की शुरुआत में तीन लोगों का उल्लेख किया। अब, हमने जो आखिरी व्यक्ति का उल्लेख किया वह जॉन हेनरी न्यूमैन था, इसलिए आपने उसे अपने नोट्स में लिख लिया है।

और फिर जॉन हेनरी न्यूमैन, कहानी को छोटा करते हुए, लेकिन 1833 में, उन्होंने ट्रैक्ट्स फॉर द टाइम्स नामक एक चीज़ लिखना शुरू किया, और यहाँ ट्रैक्ट्स फॉर द टाइम्स का शीर्षक सबसे ऊपर है। अब, ये ट्रैक्ट्स सिर्फ वे ट्रैक्ट्स नहीं थे जिन्हें आप सड़क के कोने पर बाँटते हैं; ये ट्रैक्ट्स बुनियादी थीसिस थे जिन्हें वह लिख रहे थे। और उन्होंने 1833 में शुरुआत की; वह एक एंग्लिकन पादरी थे, इसलिए उन्होंने देखना शुरू किया, उन्होंने देखना शुरू किया, उन्होंने एंग्लिकन चर्च और नवीनीकरण की आवश्यकता और इसी तरह की अन्य बातों के बारे में बात करना शुरू किया।

और यहाँ नीचे दूसरा छोटा सा वाक्य, उस समय 1833 में, वह एंग्लिकन चर्च को एक माध्यम के रूप में देखता है। तो, इसका क्या मतलब है, और अगर हमने नहीं किया, तो मुझे लगता है कि हमने कक्षा के अंत में इसका उल्लेख किया है, इसलिए हम इसके बारे में थोड़ा और बात करेंगे। इसका मतलब यह है कि उन्होंने एंग्लिकन चर्च को प्रोटेस्टेंटिज़्म और रोमन कैथोलिकवाद के बीच एक महान मध्य मार्ग के रूप में देखा।

यह मध्य मार्ग है। और ठीक 1833 में, जब उन्होंने लिखना शुरू किया, तो उनका मानना था कि एंग्लिकन चर्च के बारे में यही है। यह सुधार के प्रोटेस्टेंटवाद और रोमन कैथोलिकवाद के बीच महान मध्य मार्ग है और होना भी चाहिए।

यह एक तरह से प्रोटेस्टेंटिज्म और रोमन कैथोलिकिज्म को एक साथ लाने में सक्षम होना चाहिए। और वैसे, मेरा मतलब यह बताना था, लेकिन जिस ऑक्सफोर्ड आंदोलन के बारे में हम बात कर रहे हैं, उसे ट्रैक्टरियन आंदोलन भी कहा जाता है क्योंकि उस समय के लिए ये ट्रैक हैं। इसलिए, अगर आप इसे अपने नोट्स में लिख लेंगे, तो मैं इसकी सराहना करूंगा।

यह ऑक्सफोर्ड आंदोलन का पर्याय है। तो, यह ट्रैक्टरियन आंदोलन या ऑक्सफोर्ड आंदोलन। ठीक है।

इसलिए, वह इसे महान मध्य मार्ग के रूप में देखता है। अब, यहाँ हम उस जगह पर हैं जहाँ हमने दूसरे दिन बात छोड़ी थी। 1841 तक, जब वह टाइम्स के लिए 90वें ट्रैक्ट्स कर रहे थे, जॉन हेनरी न्यूमैन ने फैसला किया कि उन्हें रोमन कैथोलिक चर्च की शिक्षा और एंग्लिकन चर्च में 39 लेखों की शिक्षा में कुछ भी अलग नहीं दिखता।

दूसरे शब्दों में, 1841 तक, वह एंग्लिकन चर्च को रोमन कैथोलिक के रूप में देखता है। और 1841 में, ऑक्सफोर्ड के बिशप ने टाइम्स के लिए ट्रैक्ट्स को रोक दिया क्योंकि ऑक्सफोर्ड के बिशप ने देखा, यह कहाँ जा रहा है? यह आंदोलन, यह ऑक्सफोर्ड आंदोलन रोमन कैथोलिक धर्म की ओर बढ़ रहा है। और हम ऐसा नहीं चाहते।

शुरू में ऐसा करने का इरादा नहीं था। हम ऐसा नहीं चाहते, लेकिन लगता है कि यह उसी दिशा में जा रहा है। इसलिए, उन्होंने टाइम्स के लिए ट्रैक्ट्स को बंद कर दिया और ऑक्सफोर्ड के बिशप ने ट्रैक्ट्स को जारी रखने से मना कर दिया।

तो, 1841 ऑक्सफोर्ड आंदोलन में एक महत्वपूर्ण तारीख बन गई। और सवाल यह है कि ऑक्सफोर्ड आंदोलन यहाँ से कहाँ जाएगा? क्या यह एंग्लिकन रहेगा या कुछ लोग कैथोलिक चर्च में चले जाएँगे? क्या होने वाला है? ठीक है, यह हमें नंबर तीन पर ले जाता है, रोमन कैथोलिक चर्च में जाना, रोमन कैथोलिक चर्च में जाना, नंबर तीन। ठीक है।

खैर, जॉन हेनरी न्यूमैन का नाम है। 1845 में, जॉन हेनरी न्यूमैन रोमन कैथोलिक बन गए। उन्होंने 1845 में रोम के प्रति अपनी आज्ञाकारिता व्यक्त की।

वह निश्चित रूप से उसी दिशा में आगे बढ़ रहा था। इसमें कोई संदेह नहीं है। टाइम्स के लिए लिखे गए ट्रैक्ट से यह बात साबित होती है।

लेकिन वह उस दिशा में आगे बढ़ रहे थे। लेकिन अब उन्होंने फैसला किया कि रोमन कैथोलिक बनने का समय आ गया है। और इसलिए, 1890 में उनकी मृत्यु तक बाकी समय में जो हुआ वह यह है कि उन्होंने इंग्लैंड के चर्च, इंग्लैंड के रोमन कैथोलिक चर्च के रोमन कैथोलिक नेता के रूप में एक लंबा और पूर्ण जीवन जिया।

और इसलिए, उन्होंने रोम में अपना समर्पण किया। ठीक है, वह 1879 में कार्डिनल बन गए। तो, 1879 में, वह कार्डिनल बन गए।

इसलिए, वह न केवल इंग्लैंड में रोमन कैथोलिक चर्च के एक धार्मिक नेता हैं, बल्कि वह इंग्लैंड में रोमन कैथोलिक चर्च के एक बौद्धिक नेता भी हैं। इसलिए, वह 19वीं सदी के एक शक्तिशाली व्यक्ति हैं, 19वीं सदी के उत्तरार्ध में, सिद्धांत के विकास में एक शक्तिशाली व्यक्ति हैं। हमारे मामले में, चर्च विज्ञान, हमने एंग्लिकन चर्च और रोमन कैथोलिक चर्च के बीच कोई अंतर नहीं देखा।

अब, जो हुआ वह यह है कि जब वह रोमन कैथोलिक बन गया, तो सचमुच कई सौ पादरी और आम लोग उसका अनुसरण करते हैं। इसलिए, 1840 के दशक के मध्य से, बहुत सारे पादरी और बहुत सारे आम लोग रोमन कैथोलिक चर्च में चले गए। इसलिए, हम उन सभी लोगों के नाम नहीं जानते हैं, लेकिन हम एक ऐसे व्यक्ति का नाम जानते हैं जो न्यूमैन की तरह बेहद प्रभावशाली बन गया, और उसका नाम हेनरी एडवर्ड मैनिंग था।

और आप तारीखें देख सकते हैं, वह न्यूमैन से मेल खाता है, आप जानते हैं, केवल कुछ साल बाद ही उसकी मृत्यु हो जाती है। हालाँकि, हेनरी एडवर्ड मैनिंग, न्यूमैन के अलावा, एक अर्थ में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, और रोमन कैथोलिक चर्च में आने वाले सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक थे। और वह वास्तव में न्यूमैन के कार्डिनल बनने से पहले कार्डिनल बन गए थे।

वे 1875 में कार्डिनल बन गए। मैनिंग इतने महत्वपूर्ण थे क्योंकि वे एक ऐसे कार्डिनल थे जो औद्योगिक क्रांति के परिणामों के लिए बहुत चिंतित थे। वे शहरों में चर्च के काम के लिए, गरीबों के साथ, कामकाजी वर्गों के साथ बहुत चिंतित थे, क्योंकि औद्योगिक क्रांति अब पूरे जोरों पर थी।

वह शहरों में गरीबों, उनके रहन-सहन की स्थिति और अन्य बातों के बारे में बहुत चिंतित थे। इसलिए, कार्डिनल मैनिंग के दिल में गरीबों के लिए एक तरह से बहुत दया थी, और वह साल्वेशन आर्मी को जानते थे, और हम इस व्याख्यान के बाद के भाग में इस बारे में बात करेंगे। इसलिए, वह निश्चित रूप से रोमन कैथोलिक चर्च में जाने वाले सबसे महत्वपूर्ण लोगों में से एक थे।

अब, रोमन कैथोलिक चर्च की ओर इस कदम के परिणामस्वरूप, रोमन कैथोलिक धर्म में इस कदम के परिणामस्वरूप, इन सभी के परिणामस्वरूप, इंग्लैंड में रोमन कैथोलिक चर्च की स्थिति में बदलाव आया है। इस समय तक, रोमन कैथोलिक चर्च को रोमन कैथोलिक चर्च के मिशनरी चर्च के रूप में देखा जाता था। इसे रोमन कैथोलिक चर्च की एक मिशनरी तरह की चौकी के रूप में देखा जाता था।

लेकिन अब जब इतने सारे एंग्लिकन रोमन कैथोलिक बन गए थे और रोमन कैथोलिक धर्म की स्थापना में मदद की थी, तो इंग्लैंड में रोमन कैथोलिक चर्च पूरी तरह से स्थापित हो गया था। इसलिए, इंग्लैंड में एक कैथोलिक पदानुक्रम स्थापित हो गया था, और यह अपने आप में एक तरह का था। इसलिए, हेनरी VIII से पहले इस तरह की स्थापना नहीं देखी गई थी।

याद रखें, यह हेनरी VIII ही था, जो वास्तव में रोमन कैथोलिक था, फिर भी इंग्लैंड में कुछ प्रोटेस्टेंट चीजें लेकर आया, एक मिश्रण। और हमने इस बारे में बात की कि हेनरी VIII के बाद

प्रोटेस्टेंटवाद और कैथोलिकवाद के बीच कैसे आगे-पीछे हुआ। खैर, अब चर्च अच्छी तरह से स्थापित हो चुका है।

तो, ठीक है। अब, हमें इस सब पर प्रतिक्रिया देखनी चाहिए। एंग्लिकन चर्च की प्रतिक्रिया क्या है? उन एंग्लिकनों के बारे में क्या जो चर्च के भीतर ही रहे? खैर, उनका नेतृत्व एडवर्ड पुसी नाम के एक व्यक्ति द्वारा किया जाता है।

उनका नाम अंततः सामने आएगा। ठीक है, यहाँ वह हैं, एडवर्ड पुसी। वह एंग्लिकन चर्च में ही रहे।

वह एक एंग्लिकन पादरी थे और एंग्लिकन चर्च में ही रहे। पुसी और अन्य लोगों के नेतृत्व में जो आंदोलन विकसित हुआ, उसे एंग्लो-कैथोलिकवाद कहा गया। क्षमा करें, शब्द।

इसे एंग्लो-कैथोलिकवाद कहा गया। ठीक है, एंग्लो-कैथोलिकवाद। जो आंदोलन विकसित हुआ उसे एंग्लो-कैथोलिकवाद या एंग्लो-कैथोलिक चर्च कहा गया।

तो, इन लोगों की रोम के प्रति आज्ञाकारिता नहीं थी। वे अभी भी एंग्लिकन थे, और वे एंग्लिकन ही रहे और एंग्लिकन चर्च के भीतर एक तरह की पार्टि या समूह की स्थापना की जिसे एंग्लो-कैथोलिक चर्च कहा जाता है। ठीक है।

अब, पुसी के अधीन एंग्लो-कैथोलिक चर्च में, एंग्लो-कैथोलिकवाद की पहचान के तीन प्रकार के चिह्न थे, मैं सिर्फ एंग्लो-कैथोलिकवाद का उल्लेख करना चाहता हूँ। तीन चीज़ें जो इसे पहचानती थीं। वे कैथोलिक नहीं हैं; वे एंग्लिकन हैं, लेकिन वे एंग्लो-कैथोलिक हैं।

ठीक है, नंबर एक निश्चित रूप से पूजा पद्धति को समृद्ध करेगा। जहाँ तक एंग्लो-कैथोलिक लोगों का सवाल है, एंग्लिकन चर्च में पूजा पद्धति बहुत ज़्यादा प्रोटेस्टेंट हो गई थी। इसमें उस भव्यता का अभाव था जो उन्होंने शुरुआती चर्च से चित्रित की थी या जिसे वे जानते थे कि कुछ रोमन कैथोलिक चर्चों के साथ सच था, जहाँ वे जाते थे।

इसलिए, वे पूजा-पद्धति का नवीनीकरण चाहते थे। वे चाहते थे, ठीक है, मैं जिस शब्द का उपयोग करता हूँ वह पूजा-पद्धति का संवर्धन है। अब, यहाँ हम, आप जानते हैं, यह है, हम पूजा-पद्धति के इस संवर्धन के साथ क्या करने जा रहे हैं? खैर, मैं तीसरे का इंतज़ार करूँगा, फिर मैं संबंध बनाऊँगा।

तो, यह नंबर एक है, पूजा-पद्धति का संवर्धन। नंबर दो, यह धर्मशास्त्र में एक नया जोर चाहता है, धर्मशास्त्र में एक नई चर्चा, विशेष रूप से चर्च का धर्मशास्त्र, मसीह के शरीर का धर्मशास्त्र। यह उस धर्मशास्त्र को प्रारंभिक चर्च में समाहित करना चाहता था, और यह कैथोलिक चर्च से चर्च धर्मशास्त्र की अच्छाई देखना चाहता था।

तो, धर्मशास्त्र पर एक नया जोर, धर्मशास्त्र पर एक नए तरह का पुनर्विचार। अब, नंबर तीन वह दिलचस्प बात है जिसका मैं उल्लेख करना चाहता हूँ। मैं इसे वापस जोड़ूँगा, खासकर नंबर एक से।

एंग्लो-कैथोलिक गरीबों के लिए बहुत चिंतित थे, और उन्होंने अपने चर्चों का निर्माण, आज, हम उन्हें आंतरिक शहर कहेंगे, औद्योगिक शहरों में किया। और फिर भी, जब उन्होंने अपने चर्चों का निर्माण किया या जब उन्होंने औद्योगिक शहरों में अपने चर्चों का जीर्णोद्धार किया, तो उनके पास बहुत मजबूत धार्मिक अनुष्ठान थे। अब, सवाल यह है कि क्या यह एक अजीब बात लगती है कि उनके पास इतने समृद्ध धार्मिक अनुष्ठान और मूर्तियाँ और चित्र और पुजारियों के लिए सुंदर वस्त्र और सब कुछ वाले चर्च होंगे, और फिर भी वे गरीबों की देखभाल करना चाहते हैं? क्या ऐसा लगता है कि यह यहाँ तालमेल से बाहर है? और उनका जवाब था नहीं, यह तालमेल से बाहर नहीं है।

और ऐसा क्यों नहीं है? क्योंकि जब गरीब लोग चर्च में आते हैं, तो उन्हें एक सुंदर जगह में आने में सक्षम होना चाहिए। उन्हें एक ऐसी जगह में आने में सक्षम होना चाहिए जहाँ उनका मन ईश्वर और मसीह और संतों की ओर उठ सके, और उन्हें अच्छे उपदेश सुनने चाहिए, और उन्हें चर्च की सुंदरता, वास्तुकला की सुंदरता, सेवा की सुंदरता देखनी चाहिए। इसलिए, उनके लिए, यह गरीबों के लिए चिंता दिखाता है कि उन्हें पूजा करने के लिए एक बढ़िया जगह दी गई है, क्योंकि उनका जीवन इतना कठिन था, जिसे वे हर दिन जीते थे।

लेकिन उनके पास एक चर्च हो सकता है जो उन्हें उनकी रोजमर्रा की गरीबी से ऊपर उठा सकता है और, कुछ समय के लिए, उन्हें एक तरह से स्वर्गीय स्तर पर ले जा सकता है। इसलिए, एंग्लो-कैथोलिक, भले ही उनके पास बहुत मजबूत धार्मिक जोर था, औद्योगिक शहरों में गरीबों की देखभाल भी करते थे और औद्योगिक शहरों में गरीबों के लिए चिंतित थे, और इसी तरह। इसलिए, यह उनके लिए महत्वपूर्ण हो जाता है।

अब, मैं एंग्लिकन चर्च की प्रतिक्रिया को रखना चाहूँगा; मैं इसे सिर्फ एक मिनट के लिए अद्यतित करना चाहूँगा। और यह एक लेख है जिसे मैंने यहाँ रखा है, इसलिए लेख पर लंबी कहानी संक्षेप में। मैं कहीं विमान में था, कहीं जा रहा था, मुझे नहीं पता, यह 1981 की बात है, भगवान आपका भला करे, यह 2001 की बात है, आपके समय से थोड़ा पहले जब मैं उस विमान में उड़ रहा था।

तो, ठीक है, थोड़ी देर पहले आप यहाँ थे, ठीक है? तो, मैं विमान में हूँ, और मैंने टाइम पत्रिका उठाई, और देखा कि यह धर्म अनुभाग में थी; यह टुडेज़ ऑक्सफ़ोर्ड मूवमेंट था, टुडेज़ ऑक्सफ़ोर्ड मूवमेंट पर एक लेख। मैंने कहा, ओह, यह बहुत बढ़िया होने वाला है। बाई ओर कार्डिनल न्यूमैन की एक तस्वीर है; वह ऐसे ही दिखते थे।

मुझे नहीं लगता कि हमने कार्डिनल न्यूमैन की कोई तस्वीर दी है, लेकिन कार्डिनल न्यूमैन अपनी कूल हैट के साथ ऐसे ही दिखते थे, मुझे लगा, वैसे भी। तो, दाईं ओर एक साथी है जिसने आज के ऑक्सफ़ोर्ड आंदोलन को आकार देने में मदद की क्योंकि 80 के दशक में, हमारे पास ऐसे लोग

थे जो एंग्लिकनवाद से रोमन कैथोलिक धर्म में चले गए थे, और इसलिए 1980 के दशक में एक और ऑक्सफोर्ड आंदोलन था। तो, मैं यहाँ लेख पढ़ रहा हूँ।

फिर मैं समारोह नामक अनुभाग पर पहुँचता हूँ। न्यू ऑक्सफोर्ड मूवमेंट का वास्तविक महत्व यह है कि इसने व्यक्तिगत मोक्ष पर इंजीलवाद के जोर और चर्च की परंपरा और अधिकार की उपेक्षा के खिलाफ कैंपस की प्रतिक्रिया की ओर ध्यान आकर्षित किया है। और फिर यहाँ एक उद्धरण है।

उद्धरण है, उद्धरण, इंजीलवाद का अर्थ है मेरा उद्धार, मेरी आत्मा का ईश्वर में होना, तथा मेरा नए नियम को पढ़ना, उद्धरण रहित, अंग्रेजी प्रोफेसर थॉमस हॉवर्ड कहते हैं, जो एंग्लो-कैथोलिक धर्म में परिवर्तित हो गए हैं तथा बोस्टन के बाहर एक इंजील स्कूल गॉर्डन कॉलेज में पढ़ाते हैं। और फिर उसने उन्हें आगे भी उद्धृत किया। हॉवर्ड कहते हैं कि रोमन चर्च के दावे, उद्धरण, खुद को लगभग अपरिहार्य के रूप में प्रस्तुत करते हैं, इतना कि मैं उन लोगों में से एक होऊंगा जिनके लिए सबसे बड़ा सवाल यह है कि क्या मैं रोमन कैथोलिक बनने के लिए नैतिक रूप से बाध्य नहीं हूँ, उद्धरण रहित।

वास्तव में, यह शायद समय की ही बात है कि अधिकांश न्यू ऑक्सफोर्डियन सुरक्षित चर्च बंदरगाह की अपनी खोज समाप्त कर देंगे और अपने 19वीं सदी के पूर्वज न्यूमैन की तरह रोम में लंगर डाल देंगे। तो, यहाँ गॉर्डन कॉलेज के थॉमस हॉवर्ड का उद्धरण है। अब, आप सभी जानते हैं कि गॉर्डन कॉलेज कहाँ है, है न? तो, आप गॉर्डन कॉलेज से परिचित हैं।

तो, यह था। अब, मैं टॉम हॉवर्ड को जानता था। टॉम हॉवर्ड यहाँ गॉर्डन में अंग्रेजी विभाग में पढ़ाते थे।

वह एंग्लो-कैथोलिक है। वह बन गया था, वह बड़ा हुआ था, मुझे लगता है, प्रेस्बिटेरियनवाद में, लेकिन वह गॉर्डन में अपने समय के दौरान एंग्लो-कैथोलिक बन गया, लेकिन वह अभी भी गॉर्डन में पढ़ा सकता था क्योंकि हमें हर साल एक सैद्धांतिक बयान पर हस्ताक्षर करना होता है, पूर्णकालिक संकाय, और वह सैद्धांतिक बयान पर हस्ताक्षर कर सकता था। लेकिन ईस्टर रविवार को, 1985 में, टॉम हॉवर्ड रोमन कैथोलिक बन गया।

उन्होंने रोम के प्रति अपनी आज्ञाकारिता का परिचय दिया, और गॉर्डन को इस बात को लेकर किसी तरह की परेशानी में डालने के बजाय कि अब हम क्या करने जा रहे हैं, हमारे पास एक प्रोफेसर है जो अब रोमन कैथोलिक बन गया है और शायद सैद्धांतिक बयान पर हस्ताक्षर नहीं कर सकता। हम क्या करने जा रहे हैं? और टॉम हॉवर्ड ने गॉर्डन को इस सब की पीड़ा से बचाया, और उसने गॉर्डन कॉलेज से इस्तीफा दे दिया। और वह अभी भी है। वह एक अच्छा रोमन कैथोलिक है।

कभी-कभी, टॉम ने यहाँ व्याख्यान दिया है। शायद वह चैपल में था, मुझे पता है, कुछ साल पहले। कभी-कभी, वह व्याख्यान देता है।

आप उनके नाम और शायद उनकी तस्वीर को उनके द्वारा दिए जा रहे किसी व्याख्यान या ऐसी ही किसी चीज़ पर देखेंगे। लेकिन यह आज का ऑक्सफ़ोर्ड आंदोलन है। इसलिए, जब आप ऑक्सफ़ोर्ड आंदोलन के बारे में बात करते हैं, तो आप सिर्फ़ 19वीं सदी में जो हुआ उसके बारे में बात नहीं कर सकते।

आपको इस बारे में बात करनी होगी कि 20वीं सदी में क्या हुआ था, और वास्तव में अभी भी क्या हो रहा है, क्योंकि अभी भी प्रोटेस्टेंट हैं, ज़्यादातर एंग्लिकन, हालाँकि विशेष रूप से नहीं, लेकिन अभी भी ऐसे प्रोटेस्टेंट हैं जो अब रोमन कैथोलिक बन रहे हैं। और बहुत सारे दिलचस्प प्रोटेस्टेंट रोमन कैथोलिक बन गए हैं। कुछ साल पहले, इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी के अध्यक्ष का मुखिया, जिसका नाम मुझे याद नहीं है, रोमन कैथोलिक बन गया।

जब वे इवेंजेलिकल थियोलॉजिकल सोसाइटी के अध्यक्ष थे, तब वे रोमन कैथोलिक बन गए, जो एक प्रोटेस्टेंट सोसाइटी है। इसलिए यह थोड़ी मुश्किल हो गई। गॉर्डन कॉलेज में हमारे सबसे प्रसिद्ध स्नातकों में से एक था।

क्रिस स्मिथ, वह घर वापसी पर बोलने के लिए यहाँ आए थे। वह नोट्रे डेम में पढ़ाते हैं, लेकिन वह अभी-अभी रोमन कैथोलिक बने हैं। वह गॉर्डन से स्नातक हैं।

उन्होंने गॉर्डन कॉलेज के समाजशास्त्र संकाय में पढ़ाया। और लगभग एक साल पहले ही वे रोमन कैथोलिक बन गए। इसलिए, आज ऑक्सफ़ोर्ड आंदोलन चल रहा है, और इसमें कोई संदेह नहीं है।

तो, ऑक्सफ़ोर्ड आंदोलन। अब, क्या आपके पास इसके बारे में कोई सवाल है? क्या आप समझते हैं कि 19वीं सदी में इंग्लैंड में क्या चल रहा था? यह इंजीलवाद के लिए काफी समय था, और उनमें से कई इंजीलवादी रोम के प्रति अपनी आज्ञाकारिता दिखा रहे थे। कोई सवाल? ठीक है, चलो अब। इसे थोड़ा सा स्पष्टीकरण चाहिए।

लेकिन अगर आप बी, साल्वेशन आर्मी को देखें, तो मैं उसका परिचय देना चाहता हूँ। मैं आंदोलन के कुछ नेताओं के बारे में बात करना चाहता हूँ, और फिर मैं साल्वेशन आर्मी के धर्मशास्त्र के बारे में बात करना चाहता हूँ। ठीक है, तो बस इस परिचय के तौर पर।

ओह, माफ़ करें। मुझे बस एक मिनट के लिए वापस जाना है। बस परिचय के तौर पर।

और यह सब पूर्ण प्रकटीकरण का मामला है। मुझे लगता है कि यह वास्तव में महत्वपूर्ण है। पूर्ण प्रकटीकरण महत्वपूर्ण है।

साल्वेशन आर्मी एक ईसाई चर्च है, साथ ही एक पंजीकृत चैरिटी भी है। और मुझे पता है कि बहुत से अमेरिकी यह नहीं जानते कि यह एक ईसाई चर्च है। यह प्रोटेस्टेंट वेस्लेयन परंपरा में है।

और मैं वास्तव में उस चर्च का सदस्य हूँ। यह साल्वेशन आर्मी के प्रति मेरी सांप्रदायिक निष्ठा है। मैं साल्वेशन आर्मी में एक आम आदमी हूँ।

मेरे माता-पिता साल्वेशन आर्मी में पादरी थे, जैसे मेरे दादा-दादी थे। अब, अमेरिका में, जब आप रविवार की सुबह अपने प्रेस्बिटेरियन चर्च या रविवार की सुबह अपने मेथोडिस्ट चर्च में जाते हैं, तो मैं और मेरी पत्नी रविवार की सुबह साल्वेशन आर्मी चर्च जाते हैं। अब, अमेरिकियों को यह थोड़ा अजीब लगता है क्योंकि अमेरिकी साल्वेशन आर्मी को चर्च के रूप में नहीं जानते हैं।

अब, सौभाग्य से, साल्वेशन आर्मी 126 देशों में है। और सौभाग्य से, अन्य देश हमें एक ईसाई चर्च के रूप में पहचानते हैं जो धर्मार्थ कार्य करता है और इसी तरह के अन्य कार्य करता है। तो मूल रूप से, यह मुख्य रूप से केवल अमेरिका में है जहाँ अमेरिकी इस संबंध को नहीं बनाते हैं।

इसलिए, हम हर समय इसके खिलाफ़ लड़ रहे हैं। हम, आप जानते हैं, हर समय लोगों को यह स्पष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं कि यह एक ईसाई चर्च और एक पंजीकृत चैरिटी है। कोई भी व्यक्ति कभी भी कैथोलिक चैरिटी को रोमन कैथोलिक चर्च की शाखा या उससे बाहर आने वाली संस्था के रूप में भ्रमित नहीं करता।

कोई भी कभी भी इस भ्रम का कारण नहीं बनता। आप जानते हैं, उन्हें पता है कि कैथोलिक चैरिटीज मंत्रालय का एक हिस्सा हैं, एक तरह से, रोमन कैथोलिक चर्च। लेकिन दुर्भाग्य से, साल्वेशन आर्मी के साथ, उन्हें इसका एहसास नहीं है, उन्हें इसका एहसास नहीं है।

इसलिए मुझे लगता है कि परिचय के तौर पर यह महत्वपूर्ण है ताकि आप इसे समझ सकें। लेकिन यह भी महत्वपूर्ण है कि मैं आपके साथ निष्पक्ष रूप से पेश आऊँ और कहूँ कि मैं यहाँ अपने संप्रदाय और अपने निजी जीवन के बारे में बात कर रहा हूँ। इसलिए, मैं आपको साल्वेशन आर्मी के बारे में नहीं बताना चाहता।

जाहिर है, मुझे इसमें दिलचस्पी है, लेकिन मैं ऐसा नहीं करना चाहता। मैं यहाँ पूरा खुलासा करना चाहता हूँ। इसलिए, मुझे लगता है कि यह महत्वपूर्ण है। अब, परिचय के तौर पर, मैं अपने बचाव में यह भी कहूँगा कि, शायद, साल्वेशन आर्मी के बारे में बात करते हुए, ओवेन चैडविक द्वारा लिखी गई एक किताब है, जिसका नाम है द विक्टोरियन चर्च।

यह दो खंडों में है। यह विक्टोरियन ईसाई धर्म पर निर्णायक कार्य है। यह, यह सबसे अच्छा है।

आप, आप, आपको इससे बेहतर कुछ नहीं मिलेगा। यदि आप 19वीं सदी में रुचि रखते हैं और विक्टोरियन क्रिश्चियन चर्च में रुचि रखते हैं, तो ओवेन चैडविक, एक महान विद्वान, ओवेन चैडविक ने कहा कि साल्वेशन आर्मी 19वीं सदी में विक्टोरियन चर्च में इंजीलवाद की सबसे बड़ी अभिव्यक्तियों में से एक थी। इसलिए, अपनी पुस्तक में, वह साल्वेशन आर्मी को एक महान, विशेषाधिकार प्राप्त स्थान देता है।

तो ऐसा नहीं है कि मेरे पास कोई अच्छा अधिकार है। हम साल्वेशन आर्मी के बारे में बात कर रहे हैं, जबकि ओवेन चैडविक मेरा समर्थन कर रहे हैं। अब, परिचय के तौर पर, मैं साल्वेशन आर्मी को इसलिए शामिल कर रहा हूँ क्योंकि यह ऑक्सफोर्ड मूवमेंट का एक आदर्श प्रतिरूप है।

ऑक्सफोर्ड आंदोलन एक उच्च चर्च आंदोलन था, जो कैथोलिक धर्म और पूजा-पाठ तथा अन्य सभी मामलों में आगे बढ़ रहा था। साल्वेशन आर्मी एक निम्न चर्च आंदोलन है, जो 19वीं शताब्दी में इंग्लैंड में मुख्य रूप से गरीबों की सेवा करता था। और चर्च जीवन के संदर्भ में, यह मूल रूप से मेथोडिस्ट था।

तो, यह ऑक्सफोर्ड आंदोलन के बिल्कुल विपरीत है। इसलिए, मैं इस व्याख्यान में जो करने की कोशिश करता हूँ, वह इन दो समूहों को देखने की कोशिश है, और फिर बीच में बहुत सारे समूह हैं। लेकिन 19वीं सदी में इंजीलवाद के संदर्भ में, मैं इन दो समूहों को देखने और यह समझने की कोशिश करता हूँ कि क्या चल रहा है।

तो यह सिर्फ परिचय के तौर पर था। मुझे इस बारे में किसी भी सवाल का जवाब देने में खुशी होगी। फिर, हम आंदोलन के नेताओं और कुछ धर्मशास्त्र के बारे में बात करेंगे। लेकिन क्या आपके पास इसके बारे में कोई सवाल है? अगर आप चाहें तो मैं अपने जीवन के बारे में बात करके खुश होऊंगा, जब हम सब कुछ जान लेंगे, और साल्वेशन आर्मी चर्च में जाना कैसा होता है।

मुझे इस बारे में बात करके खुशी होगी। साथ ही, यहाँ मेरी रूपरेखा को देखते हुए, मुझे एक बात याद आई जो मैं पूछना चाहता था: क्या आप में से कोई कभी एंग्लो-कैथोलिक चर्च सेवा में गया है? क्या आप में से कोई कभी एंग्लो-कैथोलिक चर्च सेवा में गया है? बोस्टन में एक एंग्लो-कैथोलिक चर्च है। वास्तव में, यह अमेरिका में एंग्लो-कैथोलिक परंपरा का नेता था, और इसे चर्च ऑफ द एडवेंट कहा जाता है।

अगर आपको कभी मौका मिले तो यह चार्ल्स स्ट्रीट के ठीक सामने है। यह बीकन हिल पर है। अगर आपको कभी मौका मिले तो क्या आप वहाँ गए हैं? आप जानते हैं कि हम कहां हैं।

आपको एडवेंट चर्च जाना चाहिए। मैं अपने अमेरिकी ईसाई छात्रों को ले जाता हूँ; नहीं, नहीं, यह एक सेमिनार है जो मैं पढ़ाता हूँ। मैं हर बार प्रोटेस्टेंट कैथोलिक ऑर्थोडॉक्स पर एक सेमिनार पढ़ाता हूँ, और हम एडवेंट चर्च जाते हैं क्योंकि यह एक आकर्षक अनुभव है।

अगर आप कभी एंग्लो-कैथोलिक चर्च में नहीं गए हैं, और यह है, यह बहुत सारे, बहुत सारे जुलूस हैं, आप जानते हैं, ऐसे वस्त्र और धूपबत्ती जो आपने अपने पूरे जीवन में पहले कभी नहीं देखी है। मेरा मतलब है, आप बस धूपबत्ती और बहुत सारी धूपबत्ती में डूबे हुए हैं। यह बहुत कैथोलिक है, और यह, वहाँ, कभी-कभी हेल मैरी भी होती है।

आपको लगता है कि आप कैथोलिक चर्च में हैं। लेकिन ऐसा नहीं है। आप एंग्लो-कैथोलिक चर्च में हैं।

आप एक एंग्लिकन चर्च में हैं। आपको लगता है कि आप एक कैथोलिक चर्च में हैं, लेकिन आप नहीं हैं। लेकिन वहाँ हेल मैरी और होली मैरी हैं, और पादरी ये खूबसूरत वस्त्र और सब कुछ पहनते हैं।

यह देखना दिलचस्प है। अगर आप कभी ऐसी चर्च परंपरा में नहीं गए हैं, तो आपको जाना चाहिए। यह अविश्वसनीय है।

तो, वैसे भी, सिर्फ अपने हित के लिए। तो, ठीक है, इसका मतलब यह है कि पहले ऐसा नहीं कहा था। ठीक है, परिचय।

ठीक है, अब आंदोलन के नेता। साल्वेशन आर्मी नामक इस आंदोलन का नेतृत्व किसने किया? मैं बस कुछ का जिक्र करूंगा। हम निश्चित रूप से सबसे प्रसिद्ध नाम से शुरू करेंगे, संभवतः 19वीं सदी से, विलियम बूथ, और ये उनकी तिथियाँ हैं, 1829-1912।

अब, विलियम बूथ का पालन-पोषण हुआ, उनका धर्मांतरण हुआ, उनका पालन-पोषण एक एंग्लिकन के रूप में हुआ, लेकिन उनका धर्मांतरण मेथोडिज्म में हुआ, और उन्हें वास्तव में मेथोडिज्म में नियुक्त किया गया। लेकिन 1865 में, उन्होंने लंदन के पूर्वी छोर पर एक आंदोलन की स्थापना की। वह लंदन के पूर्वी छोर पर गरीबों, बहिष्कृत लोगों और जीवन की दुर्दशा से इतने चिंतित थे कि उन्होंने इन लोगों की सेवा करने के लिए एक आंदोलन की स्थापना की, और इस आंदोलन को ईसाई मिशन कहा जाता है।

तो, विलियम बूथ 1865 में क्रिश्चियन मिशन के संस्थापक हैं। ठीक है, और लंबी कहानी संक्षेप में, 1878 में, वह क्रिश्चियन मिशन बहुत स्वाभाविक रूप से साल्वेशन आर्मी 1878 में विकसित हुआ। विलियम बूथ शायद 19वीं सदी का सबसे प्रसिद्ध नाम है।

मैंने विलियम बूथ की जीवनी लिखी है और उनकी पत्नी कैथरीन की भी जीवनी लिखी है; हम उनके बारे में बात करेंगे। तो, मुझे विलियम बूथ में वास्तविक रुचि है, जाहिर है, और विलियम बूथ के बारे में कुछ जानकारी है, लेकिन बहुत, बहुत दिलचस्प है, उनके अपने जीवन में जो विकास हुआ। हालाँकि, गरीबों के लिए चिंता और गरीबों की सेवा करने के लिए उन्होंने ईसाई मिशन, साल्वेशन आर्मी की स्थापना की थी।

मैं सिर्फ साल्वेशन आर्मी की स्थापना के बारे में बताना चाहता हूँ। यह एक बहुत ही ब्रिटिश चीज़ थी क्योंकि 19वीं सदी में, और यह आज भी सच है अगर आप आज इंग्लैंड जाएँ, तो आप में से कितने लोग इंग्लैंड गए हैं? चलिए पता करते हैं। नहीं।

एक. रूथ, तुम वहाँ जा चुकी हो। तो, तुम शायद लंदन भी गई हो।

ठीक है। आप में से बाकी लोग किसी दिन जाएँगे, इसलिए, थोड़ा आगे, दूसरी जगहों पर। ठीक है।

खैर, आप उस ब्रिटिश संस्कृति से जानते होंगे, और खास तौर पर यह 19वीं सदी में सच था, वह ब्रिटिश संस्कृति, वर्दी पहने हुए लोग, बैंड में बजने वाले लोग, अब ब्रिटिश बैंड, हाई स्कूल, अमेरिकी हाई स्कूल बैंड नहीं, बल्कि ब्रिटिश बैंड, सड़कों पर मार्च करते लोग। उस ब्रिटिश संस्कृति में, यह सब फिट बैठता है। और इसलिए, साल्वेशन, साल्वेशन आर्मी स्वाभाविक रूप से उस संस्कृति का हिस्सा बन गई, और, और अभी भी है।

यह, आप जानते हैं, अभी भी, अभी भी उस दुनिया का हिस्सा होगा। तो, ठीक है। कैथरीन मम्फोर्ड उसका पहला नाम था।

कैथरीन मम्फोर्ड बूथ, उसी वर्ष पैदा हुई, लेकिन काफी पहले मर गई, 1890 में मर गई। वह विलियम बूथ की पत्नी बन गई, और साथ में, उनके आठ बच्चे थे। उन्होंने एक बच्चे को गोद लिया, लेकिन कैथरीन मम्फोर्ड बूथ। अब, हम बाद में उसका भी उल्लेख करेंगे, क्योंकि वह मंत्रालय में महिलाओं के लिए बहुत अधिक थी।

यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण था, और उन्होंने खुद भी मंत्रालय में प्रवेश किया, और हम इसके बारे में थोड़ी देर बाद बात करेंगे। उनके सभी बच्चों में से, मैं जिस एकमात्र बच्चे का उल्लेख करूँगा, वह विलियम ब्रैमवेल बूथ है। वह उनका सबसे बड़ा बेटा था, और उसने विलियम बूथ का स्थान लिया।

जब विलियम बूथ की मृत्यु हुई, तो उन्होंने साल्वेशन आर्मी के जनरल के रूप में विलियम बूथ का स्थान लिया। वहाँ केवल एक जनरल है। वहाँ केवल एक अंतरराष्ट्रीय नेता है।

यह आज भी सच है। और विलियम ब्रैमवेल बूथ अपने पिता के बाद साल्वेशन आर्मी के दूसरे जनरल बने। 1929 में उनकी मृत्यु हो गई।

आप शायद उस नाम को न पहचान पाएं, विलियम ब्रैमवेल। विलियम ब्रैमवेल इंग्लैंड में एक बहुत प्रसिद्ध पवित्रता प्रचारक थे, और इसलिए उन्होंने अपने सबसे बड़े बेटे का नाम उस पवित्रता प्रचारक के नाम पर रखा, विलियम ब्रैमवेल बूथ, क्योंकि वे, विलियम और कैथरीन, दोनों ही उस पवित्रता परंपरा, उस मेथोडिस्ट पवित्रता परंपरा में थे, इसलिए वे महत्वपूर्ण थे। और यहाँ सिर्फ एक और नाम है।

यह आदमी महत्वपूर्ण हो जाता है। उसका नाम जॉर्ज स्कॉट रेलटन है, और आप उसकी तारीखें वहाँ देख सकते हैं। संक्षेप में, मैं जॉर्ज स्कॉट रेलटन हूँ। जॉर्ज स्कॉट रेलटन वेस्लेयन मेथोडिस्ट प्रचारक बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहे थे।

उन्हें लगा कि भगवान ने उन्हें यही बनने के लिए बुलाया है: वेस्लेयन मेथोडिस्ट प्रचारक। यही वह बनने के लिए प्रशिक्षण ले रहा था। फिर, 1872 में, उन्होंने लंदन में ईसाई मिशन नामक एक चीज़ के बारे में सुना, और वह विलियम और कैथरीन बूथ और उनके द्वारा चलाए जा रहे ईसाई मिशन को देखने के लिए लंदन गए।

वह इससे बहुत प्रभावित हुए, इसलिए वे ईसाई मिशन में शामिल हो गए। वे ईसाई मिशन में सबसे महत्वपूर्ण नेताओं में से एक बन गए, और फिर जब ईसाई मिशन साल्वेशन आर्मी बन गया, तो वे सबसे महत्वपूर्ण नेताओं में से एक बन गए। जॉर्ज स्कॉट रेलटन काफी आलोचनात्मक थे।

उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका में साल्वेशन आर्मी का काम शुरू नहीं किया था। यह पहले फिलाडेल्फिया में शुरू हुआ था, लेकिन उन्होंने 1880 में औपचारिक रूप से साल्वेशन आर्मी के काम को संयुक्त राज्य अमेरिका में लाया। इसलिए, जॉर्ज स्कॉट रेलटन बहुत महत्वपूर्ण हैं।

जॉर्ज के बारे में एक छोटी सी मज़ेदार कहानी, एक अजीब कहानी। वह एक अजीब आदमी था, लेकिन इसका किसी भी चीज़ से कोई लेना-देना नहीं है, इसलिए मुझे उम्मीद है कि आप इस बात के बीच कोई संबंध बनाने की कोशिश नहीं कर रहे हैं कि क्या महत्वपूर्ण है और क्या नहीं। यह महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन यह सिर्फ एक मज़ेदार कहानी है।

जब वह लंदन आया, तो उसने बूथ्स को देखा और इस ईसाई मिशन के बारे में पता लगाया; वह बहुत रोमांचित था। उसने कहा, ओह, मैं आप लोगों के साथ जुड़ने जा रहा हूँ। और विलियम और कैथरीन, जिनका घर पहले से ही व्यस्त था, ने कहा, ठीक है, आप जानते हैं, आप दो या तीन सप्ताह के लिए हमारे साथ क्यों नहीं चले जाते? इससे आपको एक अपार्टमेंट खोजने और बसने का समय मिल जाएगा।

सो, उन्होंने ऐसा ही किया। वह लंदन में रहने के लिए जगह ढूँढने के लिए उनके साथ रहने चले गए। और 11 साल बाद वह वहाँ से चले गए।

इसलिए, उन्हें एहसास नहीं हुआ कि एक बार जब उन्होंने जॉर्ज को आने के लिए कहा, तो वह रहने के लिए आ गया, और वह उनके साथ 11 साल तक रहा। और फिर उसे आखिरकार एक जगह मिल गई, और आप जानते हैं, उसने शादी कर ली और एक जगह मिल गई। तो यह जॉर्ज है।

लेकिन एक बहुत ही दिलचस्प व्यक्ति, जॉर्ज स्कॉट रेलटन। लेकिन ये शुरुआती साल्वेशन आर्मी के कुछ नेता हैं। 1872.

ईसाई मिशन की स्थापना 1865 में हुई थी। और वास्तव में, संक्षेप में, विलियम बूथ ने एक पुस्तिका लिखी। और पुस्तिका का नाम था 'सुसमाचार के साथ जनसमूह तक कैसे पहुँचें'।

और जॉर्ज स्कॉट रेलटन, मुझे नहीं पता कि उन्हें वह पैम्फलेट कहां से मिला। वह लंदन में नहीं रहते थे, लेकिन उन्होंने यह पैम्फलेट उठाया, सुसमाचार के साथ लोगों तक कैसे पहुँचें। उन्होंने कहा, ओह, मुझे इस आदमी, विलियम बूथ के बारे में पता लगाना है।

तो यही बात उन्हें लंदन खींच लाई। और फिर उनकी मुलाकात बूथ्स से हुई, और उन्हें ईसाई मिशन बहुत पसंद आया, और वे एक पादरी बन गए। और फिर वे उनके साथ 11 साल रहे और साल्वेशन आर्मी और बाकी सब चीज़ों की स्थापना में मदद की।

लेकिन किसी भी मामले में, यह 1872 था जब वह उनके साथ शामिल हो गया। ठीक है, तो यह नेतृत्व का कुछ हिस्सा है। अब, मुझे नहीं पता कि आप बाईं ओर विलियम और दाईं ओर कैथरीन की इन तस्वीरों को पहचान पाएंगे या नहीं, लेकिन वे विलियम और कैथरीन की बहुत लोकप्रिय तस्वीरें हैं।

तो, शायद आपको ये तस्वीरें थोड़ी जानी-पहचानी लगें। तो, कैथरीन बूथ की अपनी जीवनी के लिए, मैंने दाईं ओर की तस्वीर का इस्तेमाल किया। विलियम बूथ की अपनी जीवनी के लिए मैंने एक और तस्वीर का इस्तेमाल किया।

और जो वर्दी वे पहनते थे, वह पुरुषों के लिए बहुत ही विशिष्ट हो गई। फिर, बोनट और सब कुछ पहनने वाली महिलाएँ 19वीं सदी की बहुत ही विशिष्ट वर्दी बन गईं। तो यह विलियम और कैथरीन बूथ के बारे में कुछ जानकारी है।

आइए तीसरे नंबर पर नज़र डालें, जो कि साल्वेशन आर्मी के धर्मशास्त्र का एक छोटा सा हिस्सा है। और यह एक ऐसा धर्मशास्त्र है जिसने उन्हें एक तरह से चिन्हित किया। और इसके लिए मुझे तीसरे नंबर की ज़रूरत होगी।

मैं बस इसे डालूँगा, और फिर हम, वहाँ चलते हैं। ठीक है, कुछ धर्मशास्त्र। मैंने चार चीज़ें चुनीं जो धर्मशास्त्रीय रूप से महत्वपूर्ण थीं और एक अर्थ में आज भी हैं।

तो, ठीक है, सबसे पहले, वेस्लेयन परंपरा में पवित्रता का सिद्धांत। हम पहले ही वेस्ले के बारे में बात कर चुके हैं। हम पहले ही पवित्रता या पूर्ण प्रेम के उनके सिद्धांत के बारे में बात कर चुके हैं, अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से ईश्वर से प्रेम करना, और अपने पड़ोसियों और खुद से प्रेम करना।

खैर, ये लोग वेस्लेयन थे। विलियम और कैथरीन दोनों वेस्लेयन थे। उनका पालन-पोषण वेस्लेयन परंपरा में, पवित्रता परंपरा में हुआ था।

और पवित्रता उनका केंद्रीय सिद्धांत बन गया। पवित्रता ईसाई मिशन और फिर साल्वेशन आर्मी के सिद्धांतों का दिल बन गई। इसलिए अगर आप आज साल्वेशन आर्मी चर्च में जाते हैं और अंदर जाते हैं, तो आप सबसे पहले क्या देखेंगे, पहली चीज़ जो आपका ध्यान खींचेगी, वह शायद, वहाँ एक उपदेश देने वाला मंच होगा, लेकिन फिर एक मेज होगी और मेज, इससे थोड़ी नीचे होगी, लेकिन मेज पर लिखा होगा प्रभु के लिए पवित्रता।

तो, वहाँ एक पवित्रता की मेज होगी, और वह तुरंत ही आपका ध्यान आकर्षित करेगी, पुलपिट, पवित्रता की मेज क्योंकि पवित्रता का सिद्धांत साल्वेशन आर्मी का केंद्रीय सिद्धांत है। तो यह उनके लिए बहुत महत्वपूर्ण हो गया और हम इसके बारे में क्या कह सकते हैं। नंबर दो, नंबर बी, मंत्रालय में महिलाओं का सिद्धांत।

खैर, कहानी को संक्षेप में कहें तो, लेकिन सेवकाई में महिलाओं के सिद्धांत के संबंध में, कैथरीन बूथ आश्चर्य की थी कि भगवान ने महिलाओं और पुरुषों दोनों को सेवकाई के लिए बुलाया है। वह कई ग्रंथों से इस बात से आश्चर्य की थी, लेकिन एक महान पाठ जोएल की पुस्तक से था जिसका इस्तेमाल पिनतेकुस्त पर किया गया था: तुम्हारे बेटे और तुम्हारी बेटियाँ भविष्यवाणी करेंगी और इसी तरह। लेकिन वह आश्चर्य की थी कि महिलाओं को सेवकाई में प्रवेश करना चाहिए।

अब, वह खुद सार्वजनिक मंत्रालय में प्रवेश करने से पहले ही इस बात से आश्वस्त थी। वह 1860 की उम्र में सार्वजनिक मंत्रालय में प्रवेश कर गई। जब वह और उसके पति, उनके पति एक मेथोडिस्ट पादरी थे, तब वह मंत्रालय में प्रवेश कर गई।

उन्होंने 1860 में प्रचार करना शुरू किया, लेकिन उन्हें कभी किसी संप्रदाय द्वारा नियुक्त नहीं किया गया। इसलिए उन्हें कभी भी नियुक्ति नहीं मिली। वह एक सार्वजनिक प्रचारक थीं, लेकिन उन्हें कभी नियुक्ति नहीं मिली।

और फिर दिलचस्प बात यह है कि जब साल्वेशन आर्मी बनी, जब ईसाई मिशन साल्वेशन आर्मी बन गया, तो वह कभी साल्वेशन आर्मी की अधिकारी नहीं बनी, या हम अधिकारी शब्द का इस्तेमाल करते हैं, जिसका मतलब मंत्री होता है। वह कभी साल्वेशन आर्मी की अधिकारी नहीं बनी। इसलिए, एक तरह से, उसने जो कुछ भी किया वह एक आम व्यक्ति की तरह था।

इसलिए, मंत्रालय में महिलाएँ बहुत महत्वपूर्ण हो गईं। अगर आप आज की बात करें, तो साल्वेशन आर्मी चर्च के इतिहास में प्रति व्यक्ति महिलाओं को मंत्रालय में नियुक्त करने वाला सबसे बड़ा संप्रदाय है। अब यह एक छोटा संप्रदाय है।

यह केवल 3 मिलियन लोगों का संप्रदाय है। इसलिए, यह कोई बड़ा संप्रदाय नहीं है, रोमन कैथोलिक चर्च की तरह नहीं, जिसमें एक अरब लोग हैं।

छोटे संप्रदाय। लेकिन प्रति व्यक्ति, संप्रदाय के आकार के अनुसार, संप्रदाय में महिलाओं की संख्या ईसाई धर्म के इतिहास में किसी भी संप्रदाय में कभी नहीं रही है। और आपको यह बताने के लिए कि यह कितना महत्वपूर्ण है, और मैं दो उदाहरणों का उपयोग कर सकता हूँ जिनसे मैं परिचित हूँ, लेकिन आपको यह बताने के लिए कि यह कितना महत्वपूर्ण है, साल्वेशन आर्मी में, यदि कोई, यदि दोनों, पति और पत्नी दोनों को ईसाई मंत्रालय के लिए नियुक्त किया जाना चाहिए।

इसलिए, अगर पति को पादरी बनना है, तो पत्नी को भी सेवकाई के लिए पादरी बनना होगा। अगर कोई महिला पादरी बनना चाहती है, तो उसके पति को भी सेवकाई के लिए पादरी बनना होगा। और हमारे चर्च में, जहाँ हम जाते हैं, सालों पहले, वहाँ एक जोड़ा था, वह प्रिंसटन में प्रेस्बिटेरियन पादरी बनने के लिए अध्ययन कर रहा था, जो बहुत दिलचस्प था।

लेकिन उन्हें फील्ड ट्रेनिंग के लिए महवा, न्यू जर्सी में साल्वेशन आर्मी में भेजा गया, जिसे वे पहले कभी नहीं जानते थे। वहाँ एक अकेली महिला थी जो साल्वेशन आर्मी की नियुक्त मंत्री थी। और वह उससे मिले, और वे प्यार में पड़ गए।

इसलिए, उसने फैसला किया कि वह साल्वेशन आर्मी में शामिल होना चाहता है, लेकिन वह उससे तब तक शादी नहीं कर सकता था जब तक कि वह समन्वय प्रक्रिया से नहीं गुजरता और अंततः समन्वयित नहीं हो जाता क्योंकि उन दोनों को मंत्रालय के लिए समन्वयित होना था। इसलिए वह था। हमने प्रिंसटन में पढ़ाई पूरी की, और फिर वह गया और साल्वेशन आर्मी में समन्वयित हो गया, और फिर उनकी शादी हो गई। उन्होंने हमारे चर्च में 10 साल तक मंत्री के रूप में सेवा की।

और उनकी दो बेटियाँ गॉर्डन कॉलेज से स्नातक हैं। लॉरेन, लॉरेन एशबरशलेगर, लॉरेन और शेरोन एशबरशलेगर। मुझे नहीं पता कि टेड, आपने उन्हें किसी काम से बुलाया था या नहीं, लेकिन उनकी दो बेटियाँ यहाँ गॉर्डन आई थीं।

इसलिए, जब आप आज साल्वेशन आर्मी चर्च में जाते हैं, तो आप एक पति और एक पत्नी को सेवा करते हुए देख सकते हैं, जैसा कि आप मेरे चर्च में आए थे। और यह पति प्रचार कर सकता है, और यह पत्नी प्रचार कर सकती है। वे दोनों ईसाई मंत्रालय के लिए नियुक्त हैं क्योंकि मंत्रालय में महिलाओं में इस विश्वास और जिसे हम साझा मंत्रालय कहते हैं; यानी, पति और पत्नी चर्च के मंत्रालय को साझा करते हैं।

तो, इसलिए समन्वय की बात वास्तव में महत्वपूर्ण है। नंबर तीन, या सी, संस्कार जीवन का सिद्धांत है, संस्कार जीवन का सिद्धांत। लंबी कहानी यहाँ संक्षेप में है, और यहाँ, यहाँ सटीक है, यह ऑक्सफोर्ड आंदोलन या एंग्लो-कैथोलिक आंदोलन के बिल्कुल विपरीत नहीं हो सकता है, अब बिल्कुल विपरीत है।

साल्वेशन आर्मी, केकर्स के साथ, प्रभु भोज या बपतिस्मा का अभ्यास नहीं करती है। इसलिए, वे, हम, हम गैर-अभ्यास कर रहे हैं। हम गैर-संस्कारात्मक नहीं हैं क्योंकि हम मानते हैं कि मसीह एकमात्र सच्चा संस्कार है, भगवान की अदृश्य कृपा का एकमात्र सच्चा दृश्य संकेत है।

इसलिए, हम कभी नहीं कहते कि हम गैर-संस्कारी हैं। हम ऐसा कभी नहीं कहेंगे। हम गैर-अभ्यास कर रहे हैं, लेकिन हम गैर-संस्कारी हैं, हम गैर-संस्कारी नहीं हैं।

लेकिन हम मानते हैं कि सारा जीवन संस्कारात्मक है। हम मानते हैं कि सारा जीवन ईश्वर की अदृश्य कृपा का एक दृश्य संकेत है। इसलिए, संस्कारात्मक जीवन में, हर आम भोजन एक संस्कारात्मक भोजन हो सकता है।

यह एक ऐसा भोजन हो सकता है जिसमें आप अपने जीवन में मसीह की उपस्थिति को याद करते हैं और इसी तरह। इसलिए, इसलिए, संस्कारात्मक जीवन का सिद्धांत बहुत महत्वपूर्ण है। इसलिए पानी के बपतिस्मा पर जोर देने के बजाय, उह, साल्वेशन आर्मी पवित्र आत्मा के बपतिस्मा पर जोर देती है।

यूचरिस्ट या कम्युनियन या लॉर्ड्स सपर पर जोर देने के बजाय, साल्वेशन आर्मी इस बात पर जोर देती है कि हर आम भोजन संस्कारात्मक हो सकता है। वास्तव में, जीवन में आप जो भी कार्य करते हैं, वह संस्कारात्मक हो सकता है, अगर वह ईश्वर की कृपा से हो। इसलिए, संस्कारात्मक जीवन बहुत महत्वपूर्ण है।

तो, ठीक है। और नंबर डी है गरीबों की सेवा। और शायद यही वह चीज है जिसके लिए आप साल्वेशन आर्मी को सबसे ज्यादा जानते हैं।

संक्षेप में, विलियम बूथ ने 1890 में अपनी प्रसिद्ध पुस्तक इन डार्कस्ट इंग्लैंड एंड द वे आउट लिखी। और उस समय तक, साल्वेशन आर्मी को यकीन हो गया था कि ईश्वर की सबसे बड़ी सेवा गरीबों की सेवा करना है। और, उम्म, अपने ईश्वर से ऊपर, अपने पूरे दिल, दिमाग, आत्मा, प्रेम से, अपने पड़ोसी को अपने जैसा ही समझो, जो तुम्हारा पड़ोसी है, तुम्हारा पड़ोसी तुम्हारे बीच सबसे गरीब है।

और इसलिए, उन्होंने 1890 में पैसे जुटाने के लिए डार्कस्ट इंग्लैंड एंड द वे आउट लिखा, वास्तव में। यह नहीं था, और यह साल्वेशनिस्टों के लिए नहीं लिखा गया था। यह ब्रिटिश जनता से पैसे जुटाने के लिए लिखा गया था, ताकि साल्वेशन आर्मी के सामाजिक मंत्रालय का समर्थन करने के लिए पैसे जुटाए जा सकें।

तो आप साल्वेशन आर्मी के सामाजिक मंत्रालय के बारे में जो देखते हैं, वह शायद बेघरों की देखभाल करने, क्रिसमस के समय लोगों को खाना खिलाने, उह, उह, गोद लिए गए बच्चों के लिए घर बनाने, या उन्हें अविवाहित माताओं के लिए घर कहा जाता था। उह, उह, तो उस तरह से सेवा करना, या एड्स पीड़ितों की सेवा करना, एड्स पीड़ितों के लिए घर, इत्यादि। तो, आप साल्वेशन आर्मी के मंत्रालय के बारे में जो देखते हैं, वह एक संगठित, एक संगठित सामाजिक मंत्रालय के संदर्भ में, उह, इन डार्कस्ट इंग्लैंड और द वे आउट से निकला है।

इसलिए, यदि आप रूट 1 पर ड्राइव करते हैं, तो आपको साल्वेशन आर्मी थ्रिफ्ट स्टोर दिखाई देगा, संभवतः, वास्तव में, यह हिलटॉप रेस्तरां के पास है, जो रविवार रात को बंद हो गया। लेकिन क्या आप साल्वेशन आर्मी थ्रिफ्ट स्टोर की कल्पना कर सकते हैं? यह रूट 1 पर ड्राइव करते हुए एक बहुत बड़ा थ्रिफ्ट स्टोर है। यह वास्तव में सौगस में है। इसलिए, जो लोग देखते हैं वह एक थ्रिफ्ट स्टोर है।

लोगों को यह एहसास नहीं है कि थ्रिफ्ट स्टोर शायद उन दो सौ लोगों के मंत्रालय का समर्थन करने के लिए है जो पीछे रहते हैं, और जो शराब या ड्रग्स के आदी हैं। और, उह, और थ्रिफ्ट स्टोर इन लोगों के मंत्रालय का समर्थन करता है। और वहाँ, वहाँ एक अद्भुत चैपल है।

वहाँ पीछे रहने के लिए हॉल हैं। वहाँ, बेशक, वहाँ पीछे भोजन कक्ष और भी बहुत कुछ है। लेकिन यह उन पुरुषों के लिए एक मंत्रालय है जो नशीली दवाओं या शराब के दुरुपयोग में शामिल हैं।

फिर, वे लोग, उपचार के हिस्से के रूप में, स्टोर और अन्य जगहों पर काम करेंगे। लेकिन, उम, तो आप, आप शायद उस मंत्रालय से परिचित होंगे। और यह सेना के कई मंत्रालयों में से एक है।

उम, लेकिन गरीबों की सेवा, उम, यह, यह दिलचस्प है। ओह, मैं, मैं नहीं कर सकता। ठीक है।

मैं सिर्फ इतना ही कहूँगा, लेकिन गरीबों की सेवा, जो कभी-कभी हमारे बीच के गरीब लोग वास्तव में बहुत अमीर लोग होते हैं। तो, संक्षेप में, मेरा एक दोस्त था, एक साल्वेशन आर्मी अधिकारी मंत्री; वह और उसकी पत्नी ओकलैंड, कैलिफ़ोर्निया में काम कर रहे थे, और सालों पहले, ओकलैंड की पहाड़ियों में बहुत बड़ी आग लगी थी, लेकिन वे आग, उम्म, वहाँ की बड़ी-

बड़ी हवेलियों में लगी थी, जो वहाँ ऊपर थीं। मेरा मतलब है, यह सिर्फ़ शहर के भीतर की आग या कुछ और नहीं थी, बड़ी-बड़ी हवेलियाँ, वहाँ बहुत अमीर लोग रहते थे।

खैर, साल्वेशन आर्मी जो काम करती है, उनमें से एक है, हम जाते हैं, और आपदा की स्थिति में फंसे लोगों को भोजन और कपड़े, आवास, आश्रय और हर चीज़ मुहैया कराते हैं। और इसलिए, मेरे दोस्त और उनकी पत्नी, उह, दूसरे साल्वेशन आर्मी कार्यकर्ताओं के साथ, आग के स्थानों पर गए, जहाँ आग जलाई जा रही थी और फायरमैन के साथ। वे वहाँ गए और अपनी कैंटीन और भोजन वगैरह की व्यवस्था की।

खैर, ये लोग जिन्होंने अपना सब कुछ खो दिया, एक तरह से, वे गरीब थे, आप जानते हैं, उम, एक तरह से, मेरे दोस्तों के लिए, वे हमारे बीच सबसे गरीब थे क्योंकि भले ही वे बहुत, बहुत अमीर लोग थे, वे अपने घरों से बाहर आए और उनके पास, उनके पास सचमुच कुछ भी नहीं था, और वे साल्वेशन आर्मी की बाहों में आ गए। साल्वेशन आर्मी उनके बड़े संकट के समय में उनकी मदद करने के लिए वहाँ थी। इसलिए, गरीबों की सेवा का मतलब हमेशा उन लोगों की सेवा नहीं होता जिनके पास पैसा नहीं है या नहीं, उम, बल्कि यह उन लोगों की सेवा है जो ऐसी परिस्थितियों में हैं जिनमें उनके अपने जीवन में बहुत गरीबी है।

और यह गरीब, उम, आंतरिक शहरों के लोग हो सकते हैं, या यह वे गरीब लोग हो सकते हैं जिन्होंने अपना सब कुछ खो दिया है और जिन्हें किसी की मदद की ज़रूरत है। और इसलिए, उम, यह बहुत अच्छा था क्योंकि ओकलैंड शहर में, उम, इन सब के बाद, उन सभी लोगों ने साल्वेशन आर्मी के लिए एक बड़ा, उम, सम्मान रात्रिभोज आयोजित किया और ज़रूरत के समय में उनकी मदद करने के लिए साल्वेशन आर्मी को धन्यवाद दिया। तो, यह वास्तव में अच्छा था।

तो, ठीक है। साल्वेशन आर्मी ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के विपरीत है। अगर आप हाई चर्च मूवमेंट और लो चर्च मूवमेंट की तलाश में हैं, तो आप ऑक्सफोर्ड मूवमेंट और साल्वेशन आर्मी में पाएंगे।

और आपको बीच में सब कुछ मिल जाएगा, लेकिन यह 19वीं सदी का कोर्स नहीं है। तो, हम समझ गए। हम यहाँ आगे बढ़ने जा रहे हैं।

ठीक है। क्या साल्वेशन आर्मी या ऑक्सफोर्ड मूवमेंट के बारे में कोई सवाल है जिसका मैं जवाब दे सकता हूँ? क्या आपके पास 19वीं सदी में इन दो आंदोलनों के बारे में कोई सवाल है जिसके बारे में आपको लगता है कि मैं आपकी मदद कर सकता हूँ? मैं आपको विलियम की जीवनी, कैथरीन की जीवनी, इत्यादि के साथ जितना आप जानना चाहते हैं, उससे कहीं ज़्यादा बता सकता हूँ। इसलिए, मैं आपको जितना जानना चाहते हैं, उससे कहीं ज़्यादा बता सकता हूँ, लेकिन जो भी आपकी रुचि को आकर्षित करता है, वह बता सकता हूँ।

ठीक है। मैं यहाँ रुकता हूँ क्योंकि मुझे कुछ घोषणाएँ करनी हैं, और हम कोई और व्याख्यान शुरू नहीं करेंगे। तो, वैसे, हम व्याख्यान नौ पर आगे बढ़ने जा रहे हैं, जो 19वीं सदी में रोमन कैथोलिक चर्च का धर्मशास्त्र है।

तो यह अगले व्याख्यान के लिए एक प्रमुख बात होने जा रही है।

यह डॉ. रोजर ग्रीन अपने चर्च इतिहास पाठ्यक्रम, रिफॉर्मेशन टू द प्रेजेंट में हैं। यह साल्वेशन आर्मी पर सत्र 17 है।